हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का प्रचीन काल से आधुनिककाल तक का स्वरूप

सुखबीर कौर
पी. एच. डी, हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय

समाज और संसार की रचना स्त्री पुरूष मिल कर ही करते है। भारतीय समाज और साहित्य दोनों में इन दोनों का स्थान रहा है। इन्हें प्रकृति पुरूषए वामभागए दक्षिणभाग और अ़द्र्धागिनीए अद्र्धाग के रूप में अभिहित किया गया है । नियम संविधान सम्बंधी प्रथम ग्रन्थ मनुस्मृति में ष्ष्यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रष्ष्। देवता कहकर उन्हें गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है । धर्म जो कि हमारे सामाजिक जीवन की धुरी है उसने भी स्त्री को पुरूष के साथ समान स्थान दिया है और कहा है कि स्त्री के बिना कोई भी धार्मिक कार्य पूरा नही माना जाएगा। प्राचीन काल में स्त्रीयों को सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष की समकक्षता प्राप्त थी यहा तक कि यज्ञ और युद्ध में भी स्त्रियाँ अपने पति के साथ सम्मिलित हुआ करती थीए परन्तु कालक्रम के साथ स्त्री की प्राचीन उच्च स्थिति में गिरावट आई है। इस्लामी आक्रमणकारियों के साथ साथ उनकी संस्कृति का भी भारत पर आक्रमण हुआ जहा भारतीय संस्कृति में स्त्री को देवी प्रतिमा जैसी स्थिति थी वहाँ इस नयी आयी हुई अपसंस्कृति में उस वासनापुर्ति का साधन और कठपुतली समझा जाने लगा । इस विषम स्थिति से बचने के लिए ही यहाँ पर्दा प्रथाए बाल विवाह और सती प्रथा जैसी परम्पराएँ प्रचलित हुई ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में भी नारी की कमोवेश यही स्थिति रही। परन्तु प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद नवजाग्रण काल में होने वाले आन्दोलनों से न केवल राजनैतिक वरन् सामाजिक चेतना भी जाग्रत हुई। तत्कालीन ब्रहा समाज तथा आर्य समाज जैसी संस्थाएँ ने नारी की

स्वतंत्रता शिक्षा और सार्वजनिक अधिकार जैसी विषयों को भी अपना कार्यक्षेत्र बनाया । इस प्रकार वर्षो से कष्ट झेलती हुई नारी भी राजा राम मोहन राय ए स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि ने सामाजिक सुधारों के फलस्वरूप चेतना में स्वतंत्र व्यक्तित्व की अनुभूति हुई । वह सामाजिक रूढियों और परप्पराओं को त्यागकर पुरूष के अनुचित एकाधिकार को नष्ट करने के लिए तैयार हो गयी। परतंत्रता की समाप्ति के बाद भारत में धर्म राजनीति अर्थ और समाज की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति का समान मूल्य निर्धारित किया गया और उसी क्रम में नारी का भी स्वतंत्र और गौरवपूर्ण स्थान स्वीकार किया गय। अतरू नारी भी पुरूष के समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भाग लेने लगी |

नारी की आर्थिक परतंत्रता और परेशानी का मुख्य कारण अभी तक की परप्परागत अन्धविश्वासए बाल विवाहए दहेज प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियाँ थी । समाज के शिक्षित नवयुवकों ने नवजागरण के इस युग में नारी को दासत्व से मुक्त कराना और उसे सहयोगिनी के रूप में देखना आरंभ कर दिया था। अतरू इस स्थिति में नारी के मन में भी अपनी मानरक्षा तथा स्वावलम्बी बनने की भावना उत्पन्न हुई । समानता और स्वतंत्रता के इस युग में अब नारी भी पुरूष के समान घर से बाहर के क्षेत्रों में कार्य करने के योग्य मानी गयी। अपनी देश का सामाजिकए राजनीतिकए साहित्यिक के परिवर्तन में नारी की आर्थिक स्वतंत्रता सहायक हुई तथा इस नयी परिस्थिति में उसे घर और बाहर के और अधिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला।

19वी शताब्दी में पाश्चात्य शिक्षा से प्रोत्साहित होकर राजा राम मोहन रायए ज्योतिबा फूले जैसे अनेक समाज सुधारक विधवा प्रताडना एबाल विवाहए सती प्रथा जैसी अनेक सामाजिक बुराईयों को जड से उखाडने में सफल हुए। रवीन्द्र नाथ ठाकुरए स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाॅधी जैसे

पुरूष विचारको ने पुरूष एवं स्त्रियों की समानता का पक्ष लिया तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में भी उन्हें भाग लेने के लिए उत्साहित किया। स्वामी विवेकानंद नारी संबंधी विचारों में अधिक कान्तिकारी थे। वे यह मानते थे कि पुरूषों और स्त्रियों के बीच में इतना अधिक अंतर नहीं होना चाहिए। उनके अनुसार एक ही प्रकार की चेतना सभी जीवों में विद्यमान होती है। वे स्त्रियों की स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

पश्चिम के नारी मुक्ति आन्दोलन जैसा कोई भी आन्दोलन अपने देश में नही हुआए इसलिए भारत के इतिहास में कभी भी पुरूष विरोधी समय नही आया। समाज सुधारकों ने भी भारतीय नारियों पर सामन्ती प्रथा द्वारा किए जाने वाले कठोर उत्पीडन को समूल नष्ट करने तथा समाज में उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए भयंकर विरोध के बाद भी कठिन संघर्ष किया एईश्वरचन्द्र विद्यासागर का लडके लडकियों दोनों को समान रूप से शिक्षा देने तथा विधवाओं के पुर्निर्ववाह सम्बंधी प्रयत्न उल्लेखनीय प्रयास किया गया। डॉ. डीण् के कर्वेए जो महाराष्ट्र के महान शिक्षाविद् थे उन्हें भी भुलाया नही जा सकता । उन्होनें विधवा गुड्डो बाई से विवाह किया और समाज को भी विधवा विवाह की ओर प्रेरित किया।

शिक्षा के कारण भारतीय नारी की स्थिति में परिवर्तन आए है। ये परिवर्तन सामाजिकए आर्थिकए राजनैतिक संदर्भो में परिलक्षित हुए है। परन्तु महिलाओं की अधिकांश जनसंख्या को रूढिवादी विचारधारा से जुझना पडता है प्रायरू उसे घर की चारदिवारी के अन्दर पिंजरें में कैद मैना की ही भांति रखा जाता है। यह स्थिति शहरी और ग्रामिण दोनों क्षेत्रों में है। इसका कही कहीं तो कारण स्त्री स्वंय ही होती है क्योकि वह अपने आपको गृहिणी पद के व्यामोह से अलग नही कर पाती घर की बडी बूढी स्त्रियाँ भी उसकी शिक्षा एघर से बाहर निकलने की स्वतंत्रता तथा नौकरी आदि का

विरोध करती है। प्रायरू यह तर्क दिया जाता है कि शिक्षा उन्हें ग्रहस्थी के कर्तव्यों से विमुख कर देगी।

भारतीय स्त्री को शिक्षित बनाने के लिए जिन महापुरूषों ने गंभीर प्रयास किए उनमें गोपाल कृष्ण गोखले एपंण् नहरू एडी के कुर्वे आदि का महत्तवपूर्ण योगदान रहा है। गाँधी जी ने अपने लेखों के द्वारा स्त्री की दुखद स्थिति को सहदयता पूर्वक स्पष्ट किया है और उसे दूर करने का सार्थक प्रयास भी किया। डाॅण् कुर्वे ने तो इस संदर्भ में आंदोलन चलाया और पूणे विश्वविद्यालय में स्त्री शिक्षा संबंधी विभाग भी चलाया।

राष्टीय स्तर पर स्त्री शिक्षा के लिए आरम्भ किए गए अभियानों में महत्तवपूर्ण आयाम एजुकेशन कमीशन की 1964-66 की रिपोर्ट थीए जिसमें उसने सिफारिश की थी श्स्त्रयों की शिक्षा का पुरूषो की शिक्षा की अपेक्षा अधिक महत्तव है। आधुनिक संसार में घर के अतिरित बाहर भी स्त्रियों के बहुत कार्य है अब वह अपने कैरियर का? निर्माण करती है और सामाजिक विकास के विवध पहलुओं के प्रति पुरूष के सामान्तर अपने कर्तव्यों का पालन करती है।ष्ष्2

निष्कर्षतरू आजादी के बाद भारत के नारी जीवन में कई परिवर्तन आएॅ। उच्च शिक्षा प्राप्त कर नारी पुरूष के समान हर क्षेत्र में आगे बढने लगी।समाज के अन्याय तथा पुरूषों की क्रूरता से बचकर अपने अस्तित्व के लिए महिलाएॅ आगे बढने लगी। पुरूषों के समान राजनीति में भी नारियों का आर्विभाव हो गयाए इन्दरा गाधी इसका एक उत्तम उदाहरण है। आदमियों की तरह विवाह के मामले में भी निर्णय लेने का अधिकार आज की नारी को है। वर्तमान युग में स्त्री पुरूष के समानधिकार पर अधिक चर्चाएँ जारी रहती है ।डॉ. लक्ष्मीसागर वाष्णेय के शब्दों में ष्ष्सामयिक नारी आवर्जनाएँ से मुक्त अपने ढंग से अपनाजीवन जीने पर बल दे रही है। वह अपना व्यक्तित्व स्वाधीन रखना चाहती है नारी व्यक्तित्व के संदर्भ में पुरूष का और पुरूष

व्यक्तित्व के संदर्भ में नारी का आ जाना स्वाभाविक और अनिर्वाय हैष्ष्3। साहित्य समाज का दर्पण होता है। प्रत्येक साहित्यिक रचना अपने युग का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए इस काल की रचनाओं में स्त्री संबंधी जिन भी पहलुओं का चित्रण किया गया है वह सभी स्त्री विमर्श के अन्तर्गत आते है चूँकि स्त्री और पुरूष मिलकर ही समाज का निमार्ण करते है इसलिए यदि साहित्य में स्त्री संबंधी विमर्श न रहा तो वह साहित्य एकांगी ही कहा जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्री अध्ययन पृष्ठ 116
2. काशीनाथ सिंह का चिन्तन और साहित्य पृष्ठ 208
3. स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य क्षमा शर्मा पृष्ठ 50

दूरभाष. *9149851170*